जान पड़ता है कि सूर्यास्त हो गया है तथा उसके दृष्टिगोचर होने पर हम समझते हैं कि सूर्य क्षितिज पर विद्यमान है। वस्तुतः तो सूर्य अपने नियत स्थान पर निरन्तर बना रहता है, अपनी दोषपूर्ण अपर्याप्त इन्द्रियों के कारण हम ही आकाश में सूर्य के उदय-अस्त होने की कल्पना किया करते हैं। अतएव यह सिद्ध होता है कि किसी भी सामान्य जीवात्मा की अपेक्षा श्रीभगवान् का आविर्भाव-तिरोभाव् पूर्णरूपेण विलक्षण है, वे स्वरूपभूता अन्तरंगा शक्ति के कारण सच्चिदानन्दघन हैं और माया से कभी दूषित नहीं होते वेद में भी प्रमाण हैं कि अजन्मा होते हुए भी श्रीभगवान् विविध दिव्य अवतार ग्रहण करते हैं। वेदान्त से यह भी सिद्ध है कि यद्यपि श्रीभगवान् जन्म लेते प्रतीत होते हैं, परन्तु वे देहान्तर नहीं करते। श्रीमद्भागवत में वे जननी के सम्मुख षडैश्वर्य समन्वित चतुर्भुज नारायण रूप से प्रकट हुए हैं। विश्वकोष के अनुसार स्वरूपसिद्ध आद्य नित्य विग्रह में उनका अवतरण उनकी निरुपाधिक कृपा का ही कार्य है। श्रीभगवान् को अपने सम्पूर्ण पूर्व आविर्भाव-तिरोधानों की शाश्वत् स्मृति रहती है, जबकि जीवात्मा देहान्तर करते ही पूर्व शरीर के सम्बन्ध में सब कुछ भूल जाता है। इसी विशिष्टता के कारण श्रीभगवान् सम्पूर्ण जीवों के परमेश्वर हैं और पृथ्वी पर अवतरण-काल में अद्भुत, अतिमानवीय लीलारस-निर्यास का परिवेषण करते हैं। श्रीभगवान् नित्य अद्वय हैं, उनके देह और स्वरूप अथवा गुण और देह में भेद नहीं है। इस सन्दर्भ में चित्त में यह जिज्ञासा हो सकती है कि इस संसार में श्रीभगवान् के प्रादुर्भाव एवं तिरोधान का वास्तव में प्रयोजन ही क्या है? अगले श्लोक में इसका विवरण है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।७।।

यदा=जिस काल में; **यदा**=जिस स्थान पर; **हि**=निःसन्देह; **धर्मस्य**=धर्म की; **ग्लानिः**=हानि; **भवति**=होती है; **भारत**=हे अर्जुन; **अभ्युत्थानम्**=वृद्धि; **अधर्मस्य** =अधर्म का; **तदा**=उस समय; **आत्मानम्**=अपने को; **सृजामि**=प्रकट करता हूँ; **अहम्** =मैं।

अनुवाद

हे भारत! जिस-जिस देश-काल में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अवतरित होता हूँ।।७।।

तात्पर्य

इस श्लोक में प्रयुक्त सृजामि पद अति महत्त्वपूर्ण है। अवतारतत्त्व के सन्दर्भ में 'सृजामि' का प्रयोग रचने के अर्थ में नहीं हो सकता, क्योंकि पूर्व श्लोक के अनुसार, भगवत्-रूप अथवा भगवत्-देह का सृजन नहीं होता, सभी भगवत्-रूप शाश्वत् हैं। अतः इस सन्दर्भ में 'सृजामि' का अर्थ श्रीभगवान् द्वारा अपने को प्रकट करना है। यद्यपि श्रीकृष्ण ब्रह्मा के प्रत्येक दिवस (कल्प) में, आठवें मनु के अट्ठाईसवें चतुर्युग के द्वापर के अन्त में प्रकट होते हैं। पर इस नियम के पालन में वे